महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

अंक – ९ | माह – जुलाई | वर्ष २०२२ | विक्रमी संवत् २०७९

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

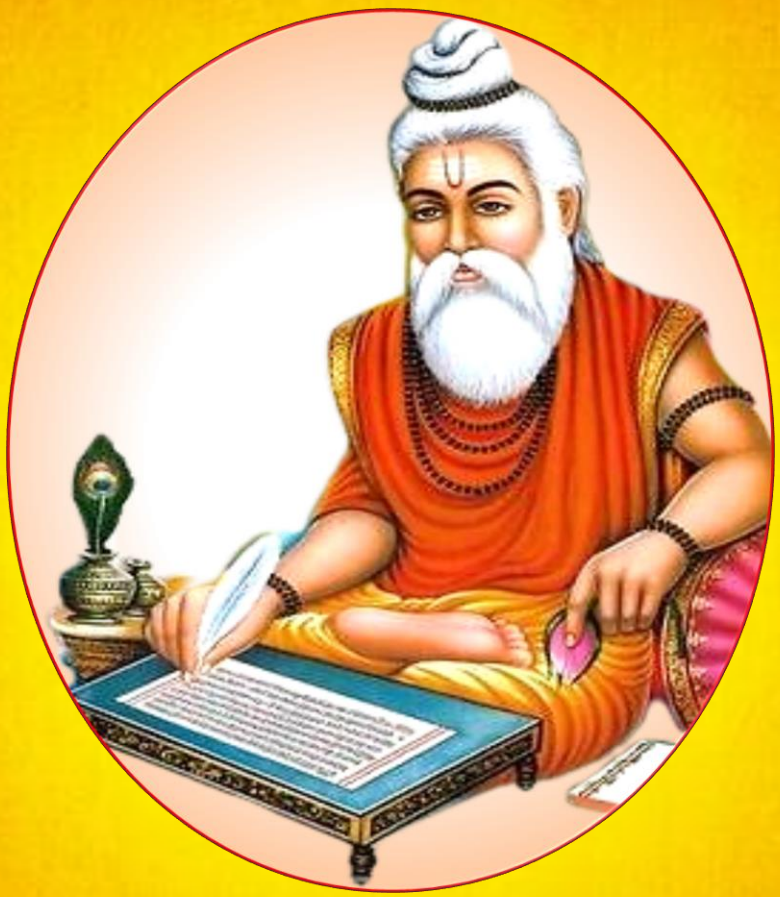

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. नरेश शर्मा
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादिका

रजनी
शीतल

ई-मेल – maharishiprabhamvsu@gmail.com

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

सम्पादकीयम्

कस्यापि राष्ट्रस्य परिचयः स्वत्वं च तस्य साहित्ये विद्यते। अतः स्वत्वस्यानुभूतिः भाषा कारयति। यस्य देशस्य स्वकीया भाषा न भवति। सः कुत्रापि सम्मानं न लभते। भारतराष्ट्रस्य विषये यदि वयं चिन्तायामः तर्हि निश्चितरूपेण जानीमः यत्। संस्कृतभाषा एव भारतस्यात्मा अस्ति। विश्वस्य प्राचीनतमा वैज्ञानिकी च भाषास्ति संस्कृतभाषा। संस्कृतभाषा भारतस्य सर्वेषां भाषाणां जननी कथ्यते। भारतस्य सर्वाः भाषाः संस्कृत भाषामाध्यमेन सर्वत्र सरलतया ज्ञातुं शक्यते। इदमेव कारणमासीत् यत् संविधाननिर्मातृसमित्या संस्कृतभाषा भारतस्य अधिकारिकं राजभाषा भवेत् इत्यानुशंसा कृता आसीत्।

तत्र डॉ. भीमराव अम्बेडकरमहोदयस्य स्पष्टमतमासीत् यत् भारतस्य प्रत्येकस्य नागरिकस्य कृते अनिवार्यतया संस्कृत शिक्षणं भवितव्यमिति। भारतस्य सम्पूर्णं प्राचीनज्ञान-विज्ञानं अस्मिन्नेव भाषायां निबद्धमस्ति संस्कृत भाषामाध्यमेन एवास्माभिः एतत्सर्वं ज्ञानं अवगन्तुं शक्यते। सर्वाः भारतीयाः भाषाः संस्कृतेनैव निस्सृताः सन्ति इति सर्वत्र स्वीक्रियते। इयं भाषा अस्माकं राष्ट्रस्य एकात्मतायाः आधारो विद्यते।

वर्तमानसमये सम्पर्णविश्वं संस्कृतस्य व्यापकतां स्वीकरोति। संस्कृतभाषायां निबद्धं ज्ञान-विज्ञानं प्रति अपि ते जिज्ञासवः सन्ति। अनेनैव कारणेन अमेरिका फ्रांस, जर्मनी, इण्डोनेशिया, मलेशिया सहिताः शताधिकदेशाः संस्कृतस्य महत्त्वं स्वीकृत्य संस्कृतशिक्षणं आरब्धवन्तः। संस्कृतभाषा एव अस्मान् भौतिकसमृद्धिभिः सार्धं आध्यात्मिकोन्नतेः मार्गम उद्घाटयति। जीवने भौतिकोन्नत्या सह आध्यात्मिकविकासस्यापि महत्त्वं वर्तते। ईशावस्योपनिषदि स्पष्टं वर्णितमस्ति यत् ये केवलं भौतिकं समृद्धिम् इच्छन्ति ते अन्धतमं प्रविशन्ति तथा च ये केवलं आध्यात्मिक साधनारताः सन्ति ते गहनान्धतमे प्रविशन्ति। अतः उभयोर्मध्ये सामञ्जस्यमत्यावश्यकं वर्तते। यथा-

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य 3 विद्यां रताः॥

स्पष्टमस्ति यत् संस्कृतग्रन्थेषु निबद्धं ज्ञानं भौतिकाध्यात्मिकमुभयविध उन्नतेः मार्गं दर्शयति। भारतस्य जीवनदर्शनं संस्कृतग्रन्थेषु एव विनिबद्धं वर्तते। पूर्वमेवोक्तं यत् भारतीयसंस्कृतेः आधारः संस्कृतभाषा एवास्ति अतः संस्कृतं विना भारतस्य यथार्थज्ञानं न भवितुं शक्यते। प्रतिवर्षं श्रावणीपूर्णिमायाः अवसरे संस्कृतदिवसः मा1न्यते। संस्कृतदिवसस्यावसरे समर्ग्रेऽपि विश्वे संस्कृतस्य प्रचाराय प्रसाराय च कार्यक्रमाः भवन्ति। एषुकार्यक्रमेषु संस्कृतस्य सामाजिकोपयोगितामहत्वस्य विषये कार्यक्रमाः समायोज्यन्ते। तत्र संस्कृतभाषायां निबद्धं ज्ञान-विज्ञानस्यापि व्यापकचर्चा क्रियते। प्रयाशः इदं संस्कृतस्य महत्वं प्रतिपादयति। ऐतेषां कार्यक्रमाणामुद्देश्यः मुख्यतः समाजे संस्कृतस्य पुनर्स्थापना एव विद्यते। व्यवहारिकदृष्ट्या यदि वयं पश्यामः चेत् संस्कृतभाषां प्रति पाश्चात्यसंस्कृतेः प्रभावेण उपेक्षाभावः एव दृश्यते। पाश्चात्य मानसिकता आधुनाऽपि भारतीयानां मनसि सर्वत्र विराजते। केवलं भाषायाः गुणगानेन एव भाषायाः संरक्षणं न भवितुमर्हति। अपितु तस्य दैनिक जीवने व्यवहारेण तथा च तन्निहितं ज्ञान-विज्ञानं युगानुकूलं कथं उपयोगी भवेत् एतस्य प्रयासमपि अस्याभिःकरणीयम्।

केवलं संस्कृतदिवसं अथवा संस्कृतसप्ताहमाध्यमेन एवास्याः संरक्षणं न भवितुं शक्यते अपितु स्वकीयदैनिकजीवने संस्कृतस्य व्यवहारो भवेत् एतस्य प्रयासमपि अस्माभिः करणीयम्। तदैव संस्कृतस्य संरक्षणं सवर्द्धनं च भवितुं शक्यते। नान्या पन्थाः।

सम्पादक

गांव मून्दड़ी में आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते कुलपति
- प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज

हमारे शास्त्रों में एक वृक्ष को सौ पुत्रों के समान बताया गया है-
प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी द्वारा पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर कुलपति जी द्वारा अनेक प्रकार के पौधे रोपित किए गए और कहा कि हमारे शास्त्रों में एक वृक्ष को सौ पुत्रों के समान बताया गया है। जो व्यक्ति एक वृक्ष लगाता है वह मानों अपनें 100 पुत्रों का भरण-पोषण करता है। वृक्ष हमारे पर्यावरण के संरक्षक होते हैं।

पर्यावरण बचाने के लिए हमें वर्ष में एक वृक्ष आवश्य लगाना चाहिए। कार्यक्रम में ऋषिराज (रेंज ऑफिसर पुन्डरी), गोपी राम (वन विभाग), लाल जी (तकनीकि आधिकारी) व विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी, प्राध्यापक, शैक्षणिक-गैर शैक्षणिक कर्मचारी व आयुर्वेद विभाग के छात्रगण भी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 क्रियानवयन के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को किया सम्बोद्धित

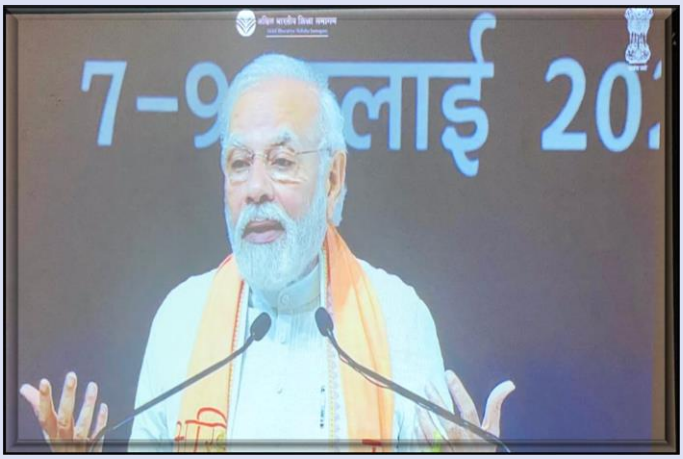

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज 7 जुलाई 2022 को वाराणसी में `के कार्यान्वयन पर अखिल भारतीय शिक्षा समागम का उद्घाटन किया। जिसमें हरियाणा प्रदेश के महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने ऑनलाइन माध्यम से अपनी उपस्थिति दी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति अब मातृभाषा में पढ़ाई का रास्ता खोल रही है। इसी क्रम में संस्कृत जैसी प्राचीन भारतीय भाषाओं को भी आगे बढ़ाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि भारत वैश्विक शिक्षा के एक बड़े केंद्र के रूप में उभर सकता है। भारतीय उच्च शिक्षा को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप तैयार करने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीय मामलों के लिए 180 विश्वविद्यालयों में विशेष कार्यालय स्थापित किए गए हैं। उन्होंने शिक्षाविदों से सत्यापित परीक्षण के साथ अपने अनुभव को मान्य करने के लिए कहा और भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश पर शोध करने और इसका सर्वोत्तम उपयोग करने के तरीके खोजने तथा दुनिया के वृद्ध समाजों के लिए समाधान खोजने के लिए भी कहा।

अखिल भारतीय शिक्षा समागम शिक्षा मंत्रालय द्वारा 7 से 9 जुलाई तक आयोजन किया गया। यह प्रख्यात शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं और अकादमिक नेताओं को अपने अनुभवों को सांझा करने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020) के प्रभावी कार्यान्वयन के रोडमैप पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान किया गया।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु प्रचार-प्रसार के लिए जन अभियान

हरियाणा राज्य के प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में सत्र 2022-23 में प्रवेश हेतु प्रचार-प्रसार दिनांक 07-07-2022 से प्रारम्भ हो चुका है जो 22-07-2022 तक चलेगा। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी ने प्रचार-प्रसार को व्यापक स्तर पर करने के लिए चार समितियों का गठन किया, जिसमें विश्वविद्यालय के विद्वान एवं अनुभवी आचार्यगणों के साथ-साथ गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों को सम्मिलित किया गया। प्रचार-प्रसार कैथल जिले के चार खण्डों (1. कलायत/राजौंद, 2. पुण्डरी, 3. ढाण्ड, 4. गुहला/चीका) के लगभग 75 स्थानों पर किया गया, जिसमें जिले के सहकारी, गैर-सहकारी विद्यालय, महाविद्यालय, बी.एड. कॉलेज के साथ- साथ अन्य शिक्षण संस्थानों के प्राचार्य, अध्यापकगण, कर्मचारी व समाज के गणमान्य सदस्यों से मिलकर संस्कृत विश्वविद्यालय में नामांकन के लिए चर्चा की और सभी ने पूर्ण आश्वसत किया कि वे सभी छात्रों और अभिभावकों से सम्पर्क कर अधिक से अधिक छात्रों का प्रवेश संस्कृत विश्वविद्यालय में करवाने का प्रयास करेंगे।

भगवान शिव विषमता में समता के प्रतीक

शिव शब्द का प्रचलित अर्थ कल्याण या मंगल बोधक बताया गया है। यहाँ बहुत गम्भीर विचार है कि शिव शब्द के अन्तर्गत जो इकार है वह शक्ति का द्योतक है इसलिए इकार न होने से 'शिव' शव में परिवर्तित हो जाता है, जो अगतिशील होता है। इस प्रकार शव शक्ति अर्थात 'इ' के सयुक्त होने पर शव शिव बन जाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी जब शक्ति स्वरूपा स्त्री का सानिध्य प्राप्त करता है तो उसकी शक्ति एवं क्षमता अधिक हो जाती है। इसलिए शिव और शक्ति को पृथक नहीं जानना चाहिए। जिस प्रकार स्वर के बिना व्यञ्जन उच्चरित नहीं होता वैसे ही शक्ति के बिना शिव पूर्ण नहीं होते। भगवान आशुतोष की उपासना से उपासक वैभवशाली हो जाता है। इसलिए श्रावण मास शिव की उपासना का यथोचित अवसर होता है। जब उपासक जलधारा से भगवान शिव का अभिषेक करता है तो वह त्रिविध तापों से मुक्त हो जाता है। **"जलधाराशिवप्रियः"** शास्त्रों में भगवान शिव की उपासना बहुत सरल ओर सहज बताई गई है।

नमस्कारप्रियोभानुः जलधारा शिवप्रियः।
अलंकार प्रियोविष्णुःब्राह्मणं मधुरं प्रियम्॥

भगवान शिव के अनेक रूप हैं। वे गृहस्थ होते हुए विरक्त हैं। तपस्या में रक्त होते हुए भी भक्तों के कल्याणार्थ सदैव तत्पर रहते हैं। शिव शब्द की अन्य व्युत्पत्ति भी इस प्रकार प्राप्त होती है-

"शेवे निष्ठति सर्वं जगत् यस्मिन् सः शिवः शम्भुः विकाररहितः।"

स्वयं शिव एवं शिव परिवार के सदस्यों में विषमताएं होते हुए समत्व का निर्दशन प्राप्त होता है। कार्तिकेय का वाहन मयूर है तो भगवान गणपति का वाहन मूषक जो परस्पर शत्रु होते हैं फिर भी इस परिवार में उनका साथ निश्चित ही विषमता में भी सहजता का बोध कराता है। इस प्रकार भोलेनाथ का वाहन वृषभ (नंदी) है तो माता पार्वती का वाहन सिंह है जो परस्पर घोर शत्रु हैं लेकिन शिव परिवार का सान्निध्य प्राप्त कर हिंसा भाव को छोड़ परस्पर संभाव रखते हैं।

मन्दारमाला लुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय॥

माता पार्वती दिव्य वस्त्रों से सुसज्जित हैं तो भगवान शिव दिगम्बर हैं। ऐसे ही भगवान शिव कण्ठ में विष धारण किये हैं तो मस्तक पर बालचन्द्रमा विराजमान है जो अमृतवर्षण करता है। इस प्रकार अनन्त विषमताओं में भी समता के प्रतीक है भगवान शंकर एवं उनका परिवार है। संसार में भी अनेक विषमताओं में समता स्थापित करना ही भगवान शिव के जीवन दर्शन का समुचित अनुकरण प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए।

बहुल-रजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबल-तमसे तत् संहारे हराय नमो नमः
जन-सुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः

भूतभावन भगवान साम्बसदा शिव जब रजोगुण से युक्त होते हैं तो जगत का सृजनकर्ता ब्रह्म (भव) बन जाते है और जब तमोगुणी होते हैं तो संसार के संहारक हर (रुद्र) बन जाते हैं और सत्वगुणों से युक्त होते हैं तो विष्णु (मृड) बन संसार के पालक बन जाते हैं। इस प्रकार जब निस्त्रैगुणी होते हैं तो शिव बन कर भक्तों के त्रिविध तापों को दूर कर सुख प्रदान करने वाले कल्याणकारी शिव के रुप में जाने जाते हैं।

डॉ मदन मोहन तिवारी
सहायकाचार्य (वेद विभाग)

महालक्ष्म्यष्टकम्

या सूर्यादधिकोज्ज्वला प्रियवरा नित्यञ्जगद्रक्षिणी
या चन्द्राधिकशीतला सुरवरा सत्सौख्यसन्दायिनी।
या भूमेरधिका विशालहृदया विश्वात्मसम्पालिनी
सा माता लक्ष्मीर्वसेन्मम गृहे दारिद्र्यसन्नाशिनी ॥०१॥

या लक्ष्मीधरवामिनी हरिशुभा विष्णुप्रियार्धाङ्गिनी
या सिन्धोस्तनया विशालहृदया पूज्या मनस्तोषिणी।
याऽज्ञानान्धविनाशिनी सुरवरा सत्या सुधापायिनी
सा माता कमला मदीयभवने राराज्यतां कामये ॥०२॥

या शान्ता वसुधा शिवा सुविमला या पद्ममालाधरा
या पूज्या हरिवल्लभा धनभरा या सर्वधर्मादृता।
या वरदानविधायिनी शिवकरा या पद्महस्तानघा
सा माता मुदिता मदीयभवने लक्ष्मीर्वसेत्सर्वदा ॥०३॥

या दारिद्र्यविनाशिनी धनभरा या दु:खकष्टापहा
या सर्वात्मनिवासिनी सकलदा या शान्तिसौख्यप्रदा।
या सम्मानयश:प्रदा गुणभरा या सर्वविश्वम्भरा
सा माता मुदिता मदीयभवने लक्ष्मीर्वसेत्सर्वदा ॥०४॥

या वात्सल्यभरा सुरम्यहृदया सत्या सुधा कोमला
या सर्वप्रथिता जगद्धितकरी द्रव्यात्मिका मंगला।
या सिद्धा भयहारिणी शिवसमा कल्याणदा कष्टहा
सा माता कमला वसेन्मम गृहे नित्यं शिवं सौख्यदा ॥०५॥

या धर्मार्थसुकामदा सकलदा या ज्ञानमोक्षप्रदा
या संसारसमस्तभोगसुखदा या पद्मनाभप्रिया।
या चिन्ताप्रविनाशिनी हरिरमा या सत्यविश्वेश्वरी
सा माता नितरां मदीयभवने राराज्यतां कामये ॥०६॥

मूर्खान्मूर्खतरोऽपि यत्सुकृपया सज्जायते पूजितो
मान्याऽमान्यवरश्च यत्सुकृपया सम्मन्यते वन्दित:।
भूमौ शक्तिविहीनशान्तमनुजस्सन्दृश्यते शक्तिद:
सा माता मुदिता मदीयभवने राराज्यतां कामये ॥०७॥

या बालवृद्धवनितायुवकादिपूज्या
या देवमानवकविश्रुतिशास्त्रवन्द्या।
या साधुदुष्टगुरुशिष्यसमस्तलक्ष्या
नित्यं गृहे वसतु सा कमलावरेण्या ॥०८॥

महालक्ष्म्यष्टकं नित्यं य: पठेच्छ्रद्धया सदा।
महालक्ष्मीप्रसादेन स भूयाद्धनवान्नर: ॥

डॉ.शशिकान्ततिवारी
(विभाग प्रभारी दर्शन)

हनुमत्त चरित्र

श्रीहनुमानजी भगवान् श्रीरामके सर्वोत्तम दास-भक्त हैं। आपका जन्म वायुदेवके अंश से और माता अञ्जनी के गर्भसे हुआ था। श्री हनुमान जी बालब्रह्मचारी, महावीर, अतिशय बलवान्, बड़े बुद्धिमान, चतुरशिरोमणि, विद्वान्, सेवाधर्मके आचार्य, सर्वथा निर्भय, सत्यवादी, स्वामिभक्त, भगवान के तत्त्व, रहस्य, गुण और प्रभावको भली प्रकार जाननेवाले, महाविरक्त, सिद्ध, परम प्रेमी भक्त और सदाचारी महात्मा हैं। आप युद्ध-विद्या में बड़े ही निपुण, इच्छानुसार रूप धारण करनेमें समर्थ तथा भगवान्के नाम, गुण, स्वरूप और लीलाके बड़े ही रसिक हैं। कहा जाता है कि अब भी जहाँ श्रीरामकी कथा या कीर्तन होता है, वहाँ श्रीहनुमान जी किसी-न-किसी वेषमें उपस्थित रहते ही हैं। श्रद्धा न होनेके कारण लोग उन्हें पहचान नहीं पाते।

श्री हनुमान जी के गुण अपार है भगवान और उनके भक्तों के गुणों का वर्णन कोई भी मनुष्य कैसे कर सकता है इस विषय में जो कुछ भी लिखा जाए वह बहुत ही थोड़ा है यहां संक्षेप में श्री हनुमान जी के चरित्रों द्वारा उनके गुणों का कुछ दिग्दर्शन करवाने का प्रयास करता हुँ।

देवराज इन्द्र की अमरावती में एक पुञ्जिकस्थला नाम की अप्सरा थी। एक दिन उससे कुछ अपराध हो गया, जिसके कारण उसे वानरी होकर पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ा। शाप देने वाले ऋषि ने बड़ी प्रार्थना के बाद इतना अनुग्रह कर दिया था कि वह जब जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर ले। चाहे जब वानरी रहे, चाहे जब मानवी। वानर राज केसरी ने उसे पत्नी के रूप में ग्रहण किया था। वह बड़ी सुन्दरी थी। वे उनसे बहुत ही प्रेम करते थे।

परमधाम पधारते समय भगवान् श्रीरामचन्द्रजी कपिवर श्रीहनुमान जी को -जगत का कल्याण करनेके लिये यहीं रहनेकी आज्ञा दे गये। वाल्मीकीय रामायणमें श्रीराम परमधाम पधारते समय हनुमान जीसे कहते हैं

मत्कथाः तावद् प्रचरिष्यन्ति यावल्लोके हरीश्वर।
तावद रमस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालयन्।
(उत्तर० १०८।३३-३४)

'वानरश्रेष्ठ ! संसारमें जबतक मेरी कथाओंका प्रचार रहे, तबतक तुम भी मेरी आज्ञाका पालन करते हुए प्रसन्नतापूर्वक विचरते रहो।' महात्मा रामचन्द्रजीके कहनेपर हनुमान जीको बड़ा हर्ष हुआ और उन्होंने कहा—

यावत्तव कथा लोके विचरिष्यति पावनी॥
तावत्स्थास्यामि मेदिन्यां तवाज्ञामनुपालयन्।
(उत्तर० १०८।३५-३६)

प्रभो ! संसारमें जबतक आपकी पावन कथाका प्रचार रहेगा, तबतक आपके आदेशका पालन करता हुआ मैं इस पृथ्वीपर ही रहूँगा।'

द्वापरयुगमें श्रीहनुमान जीने भीमसेन और अर्जुनको भी दर्शन दिये थे। कलियुगमें भी आपके प्रकट होनेकी कई कथाएँ मिलती हैं। आपके गुण, प्रभाव और माहात्म्यका बड़ा विस्तार है। यहाँ बहुत ही संक्षेप में उसका दिग्दर्शनमात्र कराया गया है। इस लेखसे श्रीहनुमान जीके अतुलित गुणोंका चिन्तन करके लाभ उठाना चाहिये। उन्हें आदर्श बनाकर अखण्ड ब्रह्मचर्य, अटल भगवद्भक्ति, वीरता, धीरता, बल, पौरुष, विद्या, साहस और बुद्धिमानी आदि गुण धारण करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

प्यारे लाल
(लिपिक- शैक्षणिक)

मेरा गांव पाडला

पाडला भारत के हरियाणा राज्य के कैथल जिले में कैथल तहसील का एक गाँव है। यह अंबाला डिवीजन के अंतर्गत आता है। यह जिला मुख्यत: कैथल से पश्चिम की ओर 14 KM दूर स्थित है। कैथल से 14 किमी. राज्य की राजधानी चंडीगढ़ से 132 किमी. पाडला के आस पास के प्रसिद्ध गांव बाबा लदाना (3 किमी), मालखेडी (4 किमी), अटेला (5 किमी), गुहना (5 किमी), मानस (5 किमी) हैं। पाडला के पूर्व की ओर कैथल तहसील, उत्तर की ओर सीवन तहसील, दक्षिण की ओर कलायत तहसील, पश्चिम की ओर पातडा तहसील से घिरा हुआ है। पाडला में स्थानीय भाषा हिंदी बोली जाती है। पाडला गाँव की कुल जनसंख्या 7275 है और घरों की संख्या 1338 है। महिला जनसंख्या 47.6% है। ग्राम साक्षरता दर 53.3% है और महिला साक्षरता दर 21.5% है। पाड़ला गांव बहुत ही अनुशासित है। गांव में सभी लोग मिलजुल कर रहते है। गांव के चारो और हरे भरे खेत है जो गांव की खुबसुरती बढ़ाते है।

शिक्षा – पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं भी सरकारी क्षेत्रों में अपना योगदान बराबर दे रही है। हमारे गांव में स्त्री पुरुष को लेकर कोई भेदभाव नही किया गया है। गांव की सरपंच भी महिला ही है। गांव की उन्नति प्रगति में महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। गांव की लगभग 60% जनसंख्या साक्षर एवं जागरुक है जिसके कारण इस गाँव में शिक्षण स्थानों का अभाव नहीं है। गांव में दो सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है। जिसमें एक लड़को के लिए व एक लड़कियों के लिए। इसके साथ-साथ 5 निजी शिक्षण संस्थान भी हैं। जिनका लाभ गावों के छात्रों के साथ-साथ आस पास के गांवों से छात्रों को भी होता है

कृषि - गांव के लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यहां सामान्य लोग खेती करते है। गांव के पास कुल 3000 एकड कृषि योग्य भूमि है। अधिकांश लोग अपने जीवन यापन के लिए खेती करते है। वे विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते है। जिनमें गेंहू और चावल की दो प्रमुख फसलें उगाई जाती है। यहां के निवासी गाय, भैंस आदि पशुओं का भी पालन करते हैं।

पर्यावरण– पर्यावरण की सुरक्षा एवं स्वच्छता का ध्यान रखते हुए गांव के पश्चिम की ओर बारिश के पानी की निकासी के लिए नाले बनाए गए हैं जिनकों ढका गया है। गाँव के पूर्व और पश्चिम की ओर विशाल तालाब स्थित हैं जिसकी चारों दिशाओं में वृक्षारोपण किया गया है।

सार्वजनिक सुविधाएँ – स्वास्थ्य केन्द्र, पेट्रोल पम्प, पशु चिकित्सा केन्द्र, अनाज मंडी, बिजली घर, खेल स्टेडियम,धर्मशाला के पास डाकघर व कृषि बैंक, सहकारी बैंकों के साथ-साथ उनके ए.टी.एम. भी स्थित है।

तीर्थस्थल - पाड़ला में प्राचीन कालिन प्रसिद्ध डेरा व मन्दिर स्थित हैं जिनके दर्शनों के लिए श्रद्धालु दूर- दूर से आते हैं। बाबा राजपुरी जी का डेरा, शिव मन्दिर, दादा खेड़ा, माता शेरावाली मन्दिर, बसंती माता फुलुमदे माता मन्दिर, काली माता मन्दिर, गोरख नाथ का मन्दिर, जाहर वीर गोगा आदि स्थित हैं। गांव में जन्माष्टमी और दशहरा के अवसर पर मेला लगता है जिसमें आस-पास के गांवों के बहुत से लोग आते है। दशहरे का मेला तीन दिन तक चलता है। पाड़ला गांव में संत बाबा प्रभु जी महाराज की आभा में गायों के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाना शुरु किया है। जिसका नाम आदर्श गौशाला और गोरक्षा दल रखा गया था। प्राचीन कालीन मान्यताओं के अनुसार हमारे गांव में प्रमुख पाँच तीर्थ स्थल है–1) जालसर तीर्थ 2) डीलसर तीर्थ 3) पोपसर तीर्थ 4) जोगी तीर्थ 5) जगतारण तीर्थ। मात्र जालसर तीर्थ ही अस्तित्व में है अन्य सभी अस्तित्वहीन हो चुके हैं।

संदीप (आचार्य साहित्य)

मुठ्ठी में कुछ सपने लेकर

मुठ्ठी में कुछ सपने लेकर,
भरकर जेबों में आशाएं।
दिल में है अरमान यही,
कुछ कर जाएं
कुछ कर जाएं।।

सूरज-सा तेज़ नहीं मुझमें,
दीपक-सा जलता देखोगे।
सूरज-सा तेज़ नहीं मुझमें,
दीपक-सा जलता देखोगे
अपनी हद रौशन करने से,
तुम मुझको कब तक रोकोगे
तुम मुझको कब तक रोकोगे।।

मैं उस माटी का वृक्ष नहीं,
जिसको नदियों ने सींचा है
मैं उस माटी का वृक्ष नहीं,
जिसको नदियों ने सींचा है
बंजर माटी में पलकर मैंने
मृत्यु से जीवन खींचा है।

मैं पत्थर पर लिखी इबारत हूँ
मैं पत्थर पर लिखी इबारत हूँ
शीशे से कब तक तोड़ोगे
मिटने वाला मैं नाम नहीं
तुम मुझको कब तक रोकोगे
तुम मुझको कब तक रोकोगे।।

इस जग में जितने ज़ुल्म नहीं,
उतने सहने की ताकत है
इस जग में जितने ज़ुल्म नहीं,
उतने सहने की ताकत है
तानों के भी शोर में रहकर
सच कहने की आदत है।।

मैं सागर से भी गहरा हूँ
तुम कितने कंकड़ फेंकोगे।
चुन-चुन कर आगे बढ़ूँगा मैं
तुम मुझको कब तक रोकोगे
तुम मुझको कब तक रोकोगे।।

झुक-झुककर सीधा खड़ा हुआ,
अब फिर झुकने का शौक नहीं
झुक-झुककर सीधा खड़ा हुआ,
अब फिर झुकने का शौक नहीं
अपने ही हाथों रचा स्वयं
तुमसे मिटने का खौफ़ नहीं

तुम हालातों की भट्टी में
जब-जब भी मुझको झोंकोगे
तब तपकर सोना बनूंगा मैं
तुम मुझको कब तक रोकोगे
तुम मुझको कब तक रोक़ोगे।।

नीलम कौशिक
(आचार्य साहित्य)

सुभाषितानि

ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्र समस्ततत्त्वार्थविलोकदक्षम्।
तेजोऽनपेक्षं विगतान्तरायं प्रवत्तिमत्सर्वजगत्त्रयेऽपि।।

ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त विषयों के तत्त्वज्ञान की अर्न्तदृष्टि प्रदान करता है और ज्ञान से ही तीनों लोकों में उसकी कर्म की ओर प्रवृत्ति होती है।

प्रश्नमञ्जरी

(१) 'गांधीविजय्' नाटक के लेखक है ?
(क) क्षमादेवी (ख) हृदयनारायण दीक्षित
(ग) मथुरा प्रसाद दीक्षित (घ) रमाकान्त शुक्ल
(२) 'मदन विनोद' ग्रन्थ का विषय है ?
(क) कामशास्त्र (ख) आयुर्वेद (ग) साहित्य (घ) वनस्पति शास्त्र।
(३) 'वृक्षायुर्वेद' के लेखक है ?
(क) महर्षि चरक (ख) महर्षि भारद्वाज (ग) पराशर (घ) बाल्मीकि।
(४) भास्कराचार्य शास्त्र के विशेषज्ञ थे।
(क) न्याय (ख) मीमांसक (ग) तन्त्र (घ) ज्योतिष
(४) करुण रस की श्रेष्ठाकृति है ?
(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) कादम्बरी
(ग) उत्तररामचरितम् (घ) ज्योतिष
(६) वैदिक छंद नही है।
(क) गायत्री (ख) जगती (ग) अनुष्टुप (घ) इन्द्रवज्रा
(७) निरुक्तत निम्न का अङ्ग है ?
(क) वेद (ख) मीमांसा (ग) व्याकरण (घ) धर्मशास्त्र
(८) पञ्चदशी के लेखक हैं ?
(क) षद्मपादाचार्य (ख) मध्वाचार्य (ग) विद्यारण्य (घ) तोतकाचार्य
(९) कुमारिलभट्ट किस शास्त्र के विद्वान थे ?
(क) वेदान्त (ख) राजनीति (ग) मीमांसा (घ) तन्त्र
(१०) जैनागमों की भाषा है ?
(क) संस्कृत (ख) पाली (ग) अर्धमागधी (घ) महाराष्ट्री

(चतुर्थङ्कस्य उत्तराणि) (उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(1) माहेश्वर सूत्र (2) इन्द्र (3) भृगु (4) भास्कराचार्य (5) मेघदूत
(6) पाणिनी (7) वाणभट्ट (8) 18 हजार (9) 335 (10) वशिष्ठ

कर्मों में कुशलता ही योग है

भारत की प्राचीन धरोहरों में योग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान से युक्त है। कर्म को पूजा भाव से करने की परम्परा भारतीय समाज का एक अंग रहा है। भगवान श्री कृष्ण ने समाज को कर्म की प्रेरणा गीता में दी है। श्रीकृष्ण को योगेश्वर कहा जाता है। कर्म की कुशलता ही योग है। कर्म करने का साधन शरीर है। शरीर को स्वस्थ रखना हमारा परम कर्तव्य है। भारतीय ऋषि परम्परा में आत्मा के साथ शरीर को भी स्वस्थ और निर्मल पर बल दिया गया है। क्योंकि कर्म को सम्यक प्रकार से करने के लिए शरीर का स्वस्थ होना भी आवश्यक है सभी प्रकार के कर्मों का माध्यम शरीर ही है। योग की सिद्धियों का माध्यम भी शरीर ही है। भारतीय ऋषियों ने योग की अनेक सिद्धियाँ अर्जित की थी।

योग का अर्थ है जोडना। भिन्नता में अभिन्नता का अनुभव करना ही योग है। हमारे ऋषियों ने योग के द्वारा शरीर, मन और प्राण की शुद्धि तथा परमात्मा की प्राप्ति के आठ साधन बताये हैं, जिन्हें अष्टाङ्ग योग कहा जाता है। ये साधन है यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इनके निरन्तर अभ्यास से ही योग की दुर्लभ सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती है। शारीरिक मानसिक बौद्धिक और आत्मिक विकास के लिए योग ही सर्वोत्तम पद्धति है। विश्व में ऐसी कोई भी अन्य पद्धति नहीं है। भारत की इस प्राचीन धरोहर में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना व्याप्त है।

आज पुन: भारत की प्राचीन योग पद्धति विश्व पटल पर अपने प्राचीन स्वरूप को स्थापित करने के लिए उद्धरित है। विश्व के प्रत्येक जन ने इसके महत्त्व को समझा है। 21 जून को 'विश्व योग दिवस' को बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भारत की प्राचीन योग पद्धति विश्व को आज की अनेक समस्याओं का समाधान दे सकती है। इसलिए योग हम सभी के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

रजनी
आचार्य पत्रकारिता

पुस्तक

बातें कई सिखाती पुस्तक
मुझे बहुत ही भाती पुस्तक
लेख, कहानी, कविता, नाटक
कई रूप में आती पुस्तक

तर्क कल्पना जिज्ञासा से
चिन्तन खूब बढाती पुस्तक
घर बैठे ही दूर देश में
विस्तृत ज्ञान कराती पुस्तक

नहीं अकेला रहने देती पुस्तक
सबका मन बहलाती पुस्तक
बचा बुराई परनिन्दा से
जीवन सुखी बनाती पुस्तक

डॉ. महावीर
(लिपिक-शैक्षणिक)

ॐ

क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि पर्यङ्कशयनं
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च
शाल्योदनरुचि:।
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च
दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:खं न च
सुखम्॥

कभी धरती पर सोना तो कभी पलंग पे, कभी सब्जी खाना तो कभी रोटी–चावल, कभी फटे हुए कपड़े पहनना, कभी बहुत कीमती कपड़े पहनना, जो व्यक्ति अपने कार्य में सर्वथा मग्न हो, उन्हे ऐसी बाहरी सुख-दु:ख से कोई मतलब नही होता।

कारगिल विजय दिवस

कारगिल विजय दिवस **26 जुलाई** को मनाया जाता है, जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है। सन 1999 में भारत ने उन उच्च चौकियों को वापस संभाला, जिनपर पाकिस्तान ने कब्ज़ा किया हुआ था। कारगिल युद्ध 60 दिनों तक लड़ा गया और 26 जुलाई 1999 को समाप्त हुआ। कारगिल युद्ध में पाकिस्तान के हजारों सैनिक मारे गए, जबकि भारत के 527 भारतीय सैनिक शहीद हुए। कारगिल युद्ध जम्मू-कश्मीर के कारगिल जिले में नियंत्रण रेखा पर हुआ, जिसे एलओसी कहते हैं। इस युद्ध के लिए पाकिस्तान ने अपनी सेना को सर्दियों में घुसपैठी बनाकर भेज दिया। जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय सीमा पर तनाव पैदा करना था।

उस समय घुसपैठिए शीर्ष पर थे और भारतीय सेना की चौकी ढलान पर थी, जिसकी वजह से भारत पर हमला करना आसान था। अंत में दोनों पक्षों के बीच युद्ध छिड़ गया । पाकिस्तानी सैनिकों ने नियंत्रण रेखा को पार कर भारत के नियंत्रण वाले क्षेत्र में प्रवेश किया। 3 मई 1999 को पाकिस्तान के लगभग 5000 सैनिकों ने कारगिल के पहाड़ी क्षेत्र में घुसपैठ की और भारत की चौकियों पर कब्जा कर लिया। लगभग एक सप्ताह बाद जब भारत को इसकी जानकारी मिली, तब भारत ने जवाब तलब किया तो पाकिस्तानी सेना ने कहा कि वे पाकिस्तानी सैनिक नहीं बल्कि मुजाहिदीन हैं।

पाकिस्तानी सशस्त्र बलों ने अपने सैनिकों और अर्धसैनिक बलों को नियंत्रण रेखा के पार भारतीय क्षेत्र में भेजना शुरू कर दिया और घुसपैठ का कोड नाम ऑपरेशन बद्र रखा गया। भारतीय वायुसेना ने जमीनी हमले के लिए मिग-2आई, मिग-23एस, मिग-27, जगुआर और मिराज-2000 लड़ाकू विमानों का इस्तेमाल किया। इस युद्ध में मिग -21 का निर्माण किया गया, जिसने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस युद्ध के दौरान ऑपरेशन सफेद सागर में मिग-21 और मिराज 2000 सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया गया। भारत पाकिस्तान के इस युद्ध में बड़ी संख्या में रॉकेट और बमों का प्रयोग किया गया। दो लाख से ज्यादा गोले, बम और रॉकेट दागे गए। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह एकमात्र ऐसा युद्ध था, जिसमें सबसे ज्यादा बमबारी की गई। अंत में भारत ने पाकिस्तानी सेना को खदेड़ कर विजय का तिरंगा लहराया और ऑपरेशन विजय को सफल बनाया।

मुकेश कुमार
लिपिक- शोध एवं प्रकाशन विभाग

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा
(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं
यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

पञ्जीकरण आरम्भ
सत्र 2022-2023

आचार्य (एम.ए.)

व्याकरण	ज्योतिष
साहित्य	दर्शन
वेद	योग
हिन्दू अध्ययन	धर्मशास्त्र

शास्त्री (बी.ए.)
चार वर्षीय (NEP2020)

व्याकरण	ज्योतिष
साहित्य	दर्शन
वेद	योग
धर्मशास्त्र	

अंशकालीन पाठ्यक्रम (डिप्लोमा)

- ✓ योग
- ✓ आयुर्वेद
- ✓ ज्योतिष
- ✓ वास्तुशास्त्र
- ✓ संस्कृत भाषा दक्षता
- ✓ वैदिक-गणित
- ✓ वेद
- ✓ कर्मकाण्ड (पौरोहित्य)

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लाभ-

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम
- रोजगार परक पाठ्यक्रमों का समावेश
- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों का अध्ययन।
- हिन्दी व अंग्रेजी विषय अनिवार्य रूप में।
- राजनीति, इतिहास वैकल्पिक विषय।
- शास्त्री करके प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठनें (I.A.S., I.P.S) का सुनहरा अवसर।
- भारतीय सेना में R.T. (J.C.O) बनने का सुनहरा अवसर।
- चिकित्सा (आयुर्वेद डिप्लोमा)
- संचार (सूचना-तकनीक)

विशेष-

विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध है।

छात्रवृत्ति

- ❖ शास्त्री एवं आचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी जिनकी योग्यता परीक्षा क्रमशः 10+2 या स्नातक में 75% या अधिक अंक होंगे उन्हें शैक्षणिक शुल्क में 75% तथा 60 % से 75% अंक प्राप्त छात्रों को शैक्षणिक शुल्क में 60 % की छूट दी जाएगी।
- ❖ शास्त्री कक्षा में 75% अंक और 75% उपस्थिति वाले छात्रों में से प्रथम तीन छात्रों तथा आचार्य कक्षा के प्रथम दो छात्रों को अगले सत्रार्ध में क्रमशः 500/- रू. प्रति माह तथा 800/- रू. प्रति माह छात्रवृत्ति दी जाएगी। उक्त में से एक-एक छात्रवृत्ति महिला छात्रा के लिए आरक्षित होगी। यह छात्रवृत्ति सत्रार्द्ध में 5 महीने तथा वर्ष में 10 माह तक दी जाएगी।
- ❖ प्रत्येक विभाग से 2 पात्र एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों के नाम "Earn While Learn" के अनुसार 100/- रुपये प्रति घंटा एवं अधितकम मासिक सीमा 2400/- रुपये मानदेय दिया जाएगा।

डिप्लोमा

आयुर्वेद (द्विवर्षीय)
शुल्क 10,000/- (प्रति वर्ष)

अन्य डिप्लोमा (एकवर्षीय)
शुल्क 6,000/-

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:-
वेबसाइट:- ww.mvsu.ac.in
संपर्क-सूत्र- 93500-45366

प्रवेश हेतु नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें
कार्यालय परिसर- डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, जगदीशपुरा (अम्बाला रोड़,कैथल-136027)